प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर 331 401

Εμαιλ : τεραπαντηπρ≅γμαιλ.χομ * Φαξ : 01564–220 233

पुरुषार्थ आदमी के जीवन में हो : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 15 जून, 2010

आचार्यश्री महाश्रमण ने स्थानीय चौरड़िया प्रशाल में निर्मित प्रवचन पण्डाल में धज़्मपद और उत्तराध्ययन के तुलनात्मक प्रवचन में कहा कि जिस व्यक्ति में पराक्रम होता है, पुरुषार्थ होता है वह व्यक्ति निर्वाण की ओर आगे बढ़ सकता है। व्यक्ति का व्यक्ति भौतिक आकांक्षा वाला भी होता हे और आत्मकल्याण की भावना वाला व्यक्ति भी होते हैं, उन्होंने तीन प्रकार के व्यक्तियों की व्याज़्या प्रस्तुत करते हुए कहा कि एक तरह के वे व्यक्ति होते हैं जो दूसरों का अनिष्ट सोचते हैं, दूसरे प्रकार वे व्यक्ति होते हैं जो केवल अपने हित की बात सोचते हैं कि मुझे धन मिले, मुझे पद प्रतिष्ठा मिले और तीसरे प्रकार के व्यक्ति होते हैं जो सबके सुख की कामना करते हैं, वे सोचते हैं कि मेरा राग–द्वेष कम हो सबका मंगल हो।

आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि आदमी में आत्म कल्याण की भावना होनी चाहिए उसे दूसरों के अहित की कामना से बचना चाहिए । उन्होंने यह भी कहा कि दुनिया में स्वर्ग को भी देखा जा सकता है और नरक को भी देखा जा सकता है। अपने पड़ौस में रहने वाले व्यक्ति परस्पर मिलते रहें और एक दूसरे की सहायता करते रहें तो स्वर्ग के समान है और यदि वे आपस में लड़ते–झगड़ते रहते हैं तो उनका जीवन नरक के समान हो जाता है।

इस अवसर पर भीलवाड़ा से समागत शैलेन्द्र बोरदिया ने मेवाड़ में फरमाये गये चातुर्मास और मर्यादा महोत्सव की घोषणा करने पर कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए मेवाड़ के भीलवाड़ा क्षेत्र में भी पधारने की अर्ज की उसके प्रत्युत्तर में आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि पहले जो घोषित चातुर्मास आदि कार्यक्रम हैं उन पर ध्यान दिया जा रहा है साथ ही उन्होंने पूर्व में घोषित पड़िहारा में महावीर जयंती आदि के कार्यक्रम को पुर्नविचार की श्रेणी में लेने की बात कही।

अभिनन्दन नाहटा ने अपने विचार व्यक्त किये। डूंगरगढ़ के गायक कलाकार मो. शकील ने अपने गीत के द्वारा भावना व्यक्त की।